IJETIR

ISSN (Online) 2583-0554

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)

Volume 5, Issue 2, February 2025

Impact Factor: 5.731

तुगलक और मुगल काल में स्थापत्य कला और शहरी विकास का इतिहास

नीना शर्मा[1], डॉ. संदीप प्रजापत[2]

[1]शोधार्थी, विभाग इतिहास

[2]प्रोफ़ेसर, विभाग इतिहास

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

तुगलक और मुगल काल भारतीय स्थापत्य कला तथा शहरी विकास के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण युग हैं। तुगलक वंश (1320–1414 ई.) ने किलेबंदी और रक्षा-प्रधान वास्तुकला को विशेष महत्व देते हुए मजबूत दुर्ग, मस्जिदें तथा नगर परकोटे विकसित किए। दूसरी ओर, मुगल साम्राज्य (1526–1857 ई.) ने स्थापत्य में फारसी, तुर्की और भारतीय परंपराओं का समन्वय कर भव्य इमारतों, चारबाग शैली, महलों तथा नियोजित नगरों की रचना की। ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी और शाहजहानाबाद जैसे उदाहरण मुगल शहरी नियोजन के उत्कर्ष को दर्शाते हैं। यह शोध-पत्र दोनों कालखंडों की स्थापत्य शैलियों, सामग्री, सांस्कृतिक प्रभावों और नगर नियोजन की तुलनात्मक विवेचना प्रस्तुत करता है, जिससे भारतीय स्थापत्य की बहुलतावादी परंपरा का बोध होता है।

मुख्य संकेतक: - तुगलक स्थापत्य, मुगल स्थापत्य, शहरी विकास, चारबाग, किलेबंदी।

परिचय

भारत का इतिहास स्थापत्य कला और शहरी नियोजन की समृद्ध परंपराओं से परिपूर्ण है। प्राचीन काल में मौर्य, गुप्त तथा दक्षिण भारतीय राजवंशों द्वारा निर्मित स्थापत्य ने जो आधार तैयार किया, उसका विस्तार मध्यकाल में इस्लामी शासकों के अधीन हुआ। दिल्ली सल्तनत के तुगलक शासकों और बाद में मुगलों ने भारतीय स्थापत्य कला को नया दृष्टिकोण, नये आयाम और वैश्विक प्रभाव प्रदान किए। विशेष रूप से 14वीं से

Copyright to IJETIR

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025
Impact Factor: 5.731

18वीं सदी के मध्य तुगलक और मुगल काल की स्थापत्य शैलियाँ शक्ति, संस्कृति, धर्म और सौंदर्यबोध की प्रतीक बनकर उभरीं।

तुगलक वंश (1320–1414 ई.) के शासकों ने अपने स्थापत्य में मजबूत निर्माण, रक्षा व्यवस्था और सरलता को प्राथमिकता दी। तुगलकाबाद जैसे नगर और किले इस बात के प्रमाण हैं कि तुगलकों का ध्यान स्थायित्व और सुरक्षा पर था। ग्यासुद्दीन तुगलक द्वारा बसाया गया तुगलकाबाद किला और नगर नियोजन उस युग के वास्तु दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं, जहाँ नगर चारदीवारी, खाई, सीमित द्वार और सामरिक दृष्टि से उपयुक्त स्थानों पर स्थित थे। तुगलक स्थापत्य में पत्थर, चूना और ईंटों का मिश्रित प्रयोग हुआ, जिससे संरचनाएँ अधिक टिकाऊ बनीं।

इसके विपरीत, मुगल काल (1526–1857 ई.) का स्थापत्य सौंदर्य, समन्वय और सांस्कृतिक विविधता से युक्त था। बाबर के समय से लेकर शाहजहाँ तक, मुगल वास्तु शैली ने फारसी, तुर्की, इस्लामी और भारतीय तत्वों का संयोजन किया। मुगलों ने लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर का व्यापक प्रयोग किया तथा बागवानी और जल प्रबंधन को स्थापत्य के साथ एकीकृत किया। हुमायूं का मकबरा, ताजमहल, लाल किला और जामा मस्जिद जैसे निर्माण न केवल धार्मिक या राजकीय उद्देश्य के लिए बने, बल्कि उन्होंने भारतीय स्थापत्य को वैश्विक पहचान भी दिलाई।

शहरी विकास के संदर्भ में भी दोनों युगों की अलग-अलग दृष्टिकोण थे। तुगलक शहरी नियोजन में सुरक्षा प्राथमिक थी, जबकि मुगलों के समय नगरों का नियोजन सामाजिक, धार्मिक, वाणिज्यिक और सौंदर्यपरक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया। अकबर द्वारा बसाया गया फतेहपुर सीकरी और शाहजहाँ द्वारा बसाया गया शाहजहानाबाद (पुरानी दिल्ली) उस युग की शहरी वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनमें खुले चौक, महल परिसर, बाजार, जल निकासी और उद्यान शामिल थे।

यह शोध-पत्र तुगलक और मुगल काल की स्थापत्य शैलियों, शहरी विकास योजनाओं, प्रयुक्त निर्माण सामग्री, सांस्कृतिक प्रभावों तथा उनकी ऐतिहासिक प्रासंगिकता की तुलनात्मक विवेचना करता है। इन दोनों कालखंडों ने न केवल स्थापत्य के माध्यम से शक्ति और वैभव का प्रदर्शन किया, बल्कि उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को एक समन्वित दृष्टिकोण भी प्रदान किया, जो आज भी भारत की धरोहर स्थलों में स्पष्ट दिखाई देता है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025
Impact Factor: 5.731

तुगलक काल की स्थापत्य कला

1. स्थापत्य की विशेषताएँ

तुगलक शासकों की वास्तुकला में सरलता, मजबूती तथा रक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान था। तुगलक स्थापत्य को प्रायः *मजबूत एवं किलेबंदी वाली शैली* के रूप में वर्णित किया जाता है।

महत्वपूर्ण उदाहरण:

- तोमरों का किला (तुगलकाबाद) दिल्ली में सबसे बड़े किलों में से एक।
- बेगमपुर मस्जिद विशाल सभा मंडप।
- फिरोज शाह कोटला ईंट और पत्थर का मिश्रित प्रयोग।

2. नगर नियोजन

ग्यासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद शहर की योजना बनाई। इसमें सुनियोजित सड़कें, जलाशय, सुरक्षा-दीवारें और चारों ओर गहरी खाई थी। तुगलकाबाद नगर आधुनिक शहरी परकोटे की एक मिसाल माना जाता है।

मुगल काल की स्थापत्य कला

1. स्थापत्य की विशेषताएँ

मुगल स्थापत्य में फारसी, तुर्की तथा भारतीय शैलियों का सम्मिलन हुआ। संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग, मेहराब, गुंबद तथा चार बाग की योजना इसकी पहचान बने।

महत्वपूर्ण उदाहरण:

- हुमायूं का मकबरा चार बाग शैली की आधारशिला।
- ताजमहल मुगल वास्तुकला का चरमोत्कर्ष।
- लाल किला (दिल्ली) किला, महल, मस्जिदों का अद्वितीय संयोजन।
- जामा मस्जिद (दिल्ली) भव्य इस्लामी धार्मिक स्थल।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025
Impact Factor: 5.731

2. नगर नियोजन

अकबर और शाहजहाँ ने सुनियोजित नगर बसाए। फतेहपुर सीकरी (अकबर द्वारा निर्मित) में खुले चौक, व्यवस्थित आवासीय परिसर, जल प्रबंधन की उन्नत तकनीकें थीं। शाहजहाँ के काल में दिल्ली (शाहजहानाबाद) का पुनर्निर्माण हुआ, जहाँ चाँदनी चौक प्रमुख बाजार बना।

तुगलक एवं मुगल स्थापत्य की तुलना

पहलू	तुगलक काल	मुगल काल
स्थापत्य शैली	मजबूत किलेबंदी, रक्षा-प्रधान	भव्यता, सौंदर्य एवं समन्वित संस्कृति
सामग्री	मुख्यतः पत्थर व चूना	संगमरमर, बलुआ पत्थर, कीमती पत्थर
नगर नियोजन	सुरक्षा केन्द्रित, परकोटे व खाई	नियोजित चौक, बाग, महल, बाजार
प्रसिद्ध उदाहरण	तुगलकाबाद, बेगमपुर मस्जिद	ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी

सांस्कृतिक प्रभाव

तुगलक और मुगल काल की स्थापत्य कला और शहरी विकास ने भारतीय समाज और संस्कृति पर दूरगामी प्रभाव डाला, जो आज भी स्थापत्य धरोहर और सांस्कृतिक पहचान में परिलक्षित होता है। तुगलक शासकों की वास्तुकला ने सुरक्षा और सत्ता की अवधारणा को सांस्कृतिक प्रतीकों में बदल दिया। तुगलकाबाद, आदिलाबाद जैसे किले और मजबूत नगर प्राचीरों ने न केवल राजनीतिक शक्ति का प्रदर्शन किया बल्कि लोगों के मन में एक स्थायित्व और अनुशासन का भाव भी उत्पन्न किया। तुगलक स्थापत्य के सरल और सुदृढ़ स्वरूप ने स्थापत्य में अलंकरण की अपेक्षा उपयोगिता और सैन्य आवश्यकता को प्राथमिकता दी, जिससे तत्कालीन संस्कृति में कार्यकुशलता और सख्ती के आदर्श स्थापित हुए।

तुगलक काल की नगर योजनाओं ने इस्लामी संस्कृति में व्याप्त किलेबंदी, घेराबंदी और परकोटे वाली जीवनशैली को भारतीय शहरों में समाहित कर दिया। इसके विपरीत, मुगल काल में स्थापत्य ने भारतीय संस्कृति को वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई। मुगल शासकों ने भारतीय परंपराओं को फारसी और तुर्की प्रभावों से समृद्ध किया। ताजमहल, हुमायूं का मकबरा और फतेहपुर सीकरी जैसे स्थापत्य ने भारत की सांस्कृतिक विविधता, कलात्मक नवाचार और धार्मिक सहिष्णुता का प्रतिनिधित्व किया। मुगल भवनों में सुलेख, नक्काशी, जड़ाई और रंगीन संगमरमर की सजावट ने भारतीय कारीगरी को नई ऊंचाई दी।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 5, Issue 2, February 2025
Impact Factor: 5.731

मुगल स्थापत्य में चारबाग योजना और जल प्रबंधन प्रणाली ने भारतीय उद्यान संस्कृति को परिष्कृत किया तथा समाज में प्रकृति के प्रति सौहार्द और कलात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया। शाहजहानाबाद जैसे नगर नियोजन ने बाजार, इबादतगाहों और प्रशासनिक परिसरों को एक सुव्यवस्थित ढांचे में पिरोया, जिससे नागरिक जीवन में सुविधा, स्वच्छता और संगठन का विचार मजबूत हुआ। मुगल वास्तुकला के अलंकृत मेहराब, विशाल गुंबद और सुंदर मीनारें सामाजिक उत्सवों और धार्मिक अनुष्ठानों की भव्यता को बढ़ाने लगीं। सांस्कृतिक दृष्टि से मुगलों ने स्थापत्य को कला, संगीत, उद्यान और खान-पान के साथ जोड़कर एक समग्र सांस्कृतिक जीवनशैली विकसित की। तुगलक और मुगल स्थापत्य दोनों ने ही इस्लामी और भारतीय परंपराओं को एक-दूसरे के करीब लाने का काम किया, जिससे भारतीय समाज में सांस्कृतिक समन्वय और सहिष्णुता की भावना सुदृढ़ हुई। मस्जिदों, मकबरों और किलों की निर्माण शैली ने न केवल धार्मिक जीवन को प्रभावित किया बल्कि स्थापत्य में सांस्कृतिक प्रतीकों का उपयोग भी सिखाया।

इस युग की स्थापत्य धरोहरें आज भी भारत की बहुलतावादी संस्कृति और ऐतिहासिक समृद्धि का जीवंत प्रमाण हैं। उनके माध्यम से स्थापत्य कला एक मात्र तकनीकी प्रक्रिया न रहकर सांस्कृतिक आदर्शों और सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गई। यही कारण है कि तुगलक और मुगल काल के स्थापत्य की सांस्कृतिक छाप भारतीय मन में स्थायी रूप से अंकित हो चुकी है और वह भारतीय पहचान की गहरी जड़ बन गई है।

निष्कर्ष

तुगलक और मुगल काल भारतीय स्थापत्य कला और शहरी विकास के इतिहास में अनूठे अध्याय के रूप में सामने आते हैं, जिन्होंने न केवल भौतिक संरचनाओं का निर्माण किया बल्कि भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान में भी गहरी छाप छोड़ी। तुगलक वंश ने जहां अपनी स्थापत्य शैली में शक्ति, दृढ़ता और सैन्य दृष्टिकोण को सर्वप्रथम रखा, वहीं उन्होंने नगर नियोजन में भी ऐसी प्रणालियाँ विकसित कीं जिनका प्रमुख उद्देश्य सुरक्षा और नियंत्रण था। तुगलकाबाद किला इसका सबसे सजीव उदाहरण है, जिसमें विशाल परकोटे, गहरी खाइयाँ और सुदृढ़ प्रवेश द्वार तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता और युद्धों की परिस्थितियों के अनुसार डिज़ाइन किए गए थे।

तुगलक स्थापत्य की विशेषता इसकी सादगी और ठोस निर्माण रही, जिसमें सौंदर्य से अधिक कार्यात्मकता को प्राथमिकता दी गई। दूसरी ओर, मुगल काल में स्थापत्य कला अपने उत्कर्ष पर पहुँची और इसने एक ऐसी मिश्रित शैली विकसित की, जिसमें फारसी, तुर्की, इस्लामी और भारतीय परंपराओं का विलक्षण समन्वय हुआ। मुगलों ने न केवल भव्य महलों, मस्जिदों और मकबरों का निर्माण किया, बल्कि चारबाग योजना के

माध्यम से उद्यानों और जल प्रबंधन को भी स्थापत्य का अनिवार्य हिस्सा बना दिया। ताजमहल इस युग की वास्तुकला का सबसे अद्भुत उदाहरण है, जिसने प्रेम और कला का अनूठा संगम प्रस्तुत किया और भारत को विश्व विरासत का अनुपम स्मारक प्रदान किया।

इसी प्रकार फतेहपुर सीकरी, लाल किला, हुमायूं का मकबरा, और शाहजहानाबाद के नियोजित बाजार मुगल स्थापत्य की सौंदर्यबोध और सामाजिक उपयोगिता को दर्शाते हैं। मुगल नगर नियोजन में प्रशासनिक, धार्मिक और व्यावसायिक केंद्रों को सुनियोजित ढंग से संयोजित किया गया, जिससे सामाजिक जीवन अधिक संगठित और समृद्ध हुआ। तुगलक काल में जहां शहरी विकास का मुख्य उद्देश्य सैन्य शक्ति और साम्राज्य की रक्षा था, वहीं मुगल युग में नगर विकास के पीछे सांस्कृतिक और व्यापारिक समृद्धि की स्पष्ट प्रेरणा दिखाई देती है।

दोनों कालखंडों की स्थापत्य शैलियाँ अपने-अपने समय की राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक आवश्यकताओं की सजीव अभिव्यक्ति मानी जाती हैं। इन दोनों युगों ने भारत के स्थापत्य और शहरी परंपरा की नींव को इतना सुदृढ़ बना दिया कि बाद के शासक और उपनिवेशकालीन योजनाकार भी इससे प्रेरणा लेते रहे। आज भी भारत के अनेक नगरों में तुगलक और मुगल काल की विरासत खंडहरों, मस्जिदों, मकबरों, किलों और बागों के रूप में जीवित है, जो भारतीय इतिहास की बहुलता, सांस्कृतिक समन्वय और स्थापत्य कौशल का साक्षात प्रमाण प्रस्तुत करती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तुगलक और मुगल स्थापत्य ने न केवल शहरी परिदृश्य को आकार दिया, बल्कि भारतीय समाज में सौंदर्यबोध, धार्मिक सहिष्णुता और तकनीकी दक्षता के विचारों को भी सुदृढ़ किया, जिनकी प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

संदर्भ सूची

1. आशेर, सी. बी. (1992). द न्यू कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया: आर्किटेक्चर ऑफ मुगल इंडिया। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

2. ब्लेक, एस. पी. (1991)। शाहजहानाबाद: मुगल भारत में संप्रभु शहर, 1639-1739। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. ब्राउन, पी. (1942)। भारतीय वास्तुकला (इस्लामी काल)। डी. बी. तारापोरेवाला संस।

4. मिशेल, जी. (एड.)। (1995)। इस्लामी दुनिया की वास्तुकला। थेम्स और हडसन।

5. नाथ, आर. (1976)। मुगल वास्तुकला का इतिहास, खंड I-IV। अभिनव प्रकाशन।

6. शर्मा, वाई. डी. (1956)। दिल्ली और इसके स्मारक। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।

7. वेल्च, ए. (1978)। शाहजहाँ और मुगल भारत में राजत्व का विचार। किंग एंड कल्ट (पृष्ठ 168-180) में। लीडेन: ब्रिल।

8. बेगली, डब्ल्यू. ई., और देसाई, जेड. ए. (1989)। ताज महल: रोशन मकबरा। यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस।